ऋषभदेव एवं तत्सम्बन्धी चित्रों की पृष्ठभूमि में अंकित प्राकृतिक रूप

डॉ० शार्दुल मिश्रा
प्रवक्ता
ललित कला संस्थान
डॉ० बी०आर० आम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा
ईमेलः shardul.mishra1977@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ० शार्दुल मिश्रा

ऋषभदेव एवं तत्सम्बन्धी चित्रों की पृष्ठभूमि में अंकित प्राकृतिक रूप

Artistic Narration 2023,
Vol. XIV, No. 1,
Article No. 3 pp. 18-23

Online available at:
https://anubooks.com/journal/artistic-narration

सारांश

मानव सभ्यता, धर्म और कला एक दूसरे के पोषक रहे है। भारतीय परम्परा में वैदिक धर्म के साथ जैन धर्म का इतिहास काफी प्राचीन रहा है। अनेक वैदिक, पौराणिक तथा जैन वांगमयो में जैन तीथंकरो का उल्लेख मिलता है, साथ ही साथ जैन पांडुलिपियों जैन चित्रों का सौंदर्य देखते बनता है। जिसकी जितनी प्रसंसा की जाये कम है। इन्ही में भगवान ऋषभदेव एवं उनके तत्संबंधी चित्रों का विस्तृत संसार कला उपासको के सामने प्रस्तुत होता है। जैसे आदि पुराण के पांडुलिपियों के चित्रों में मानव से सम्बंधित विभिन दृश्यों का अंकन किया गया है साथ ही साथ पालतू तथा हिंसक पशु पछियो का चित्रण भी पर्याप्त मात्रा में है। विशेषकर हाथी का चित्रण दर्शनीय है।

मुख्य बिन्दु

प्रकृत, पुराण, पाण्डुलिपि, चित्रसंकन, इंद्र, ऐरावत ऐरावत हाथी इत्यादि।

मानव सृष्टि के आरम्भ से प्रकृति में पलपल होने वाले परिवर्तनों से आनन्दित एवं चमत्कृत होता रहा है। यही कारण है कि मनुष्य के सांस्कृतिक उत्थान में प्रकृति की विशेष प्रासंगिकता है क्योंकि कलाकार ने प्राकृतिक रूपों में सृष्टि से संवाद किया है। वह प्रकृति के प्रत्येक रूप को न केवल निहारता रहा अपितु उसके सतत् अन्वेषण में लीन रहा। अनेक ग्रन्थों में विशेषकर संस्कृत एवं जैन ग्रन्थों में प्राकृतिक रूपों में महात्म्य की विस्तृत चर्चा हुई है। इनमें 'वृतह संहिता मेघमाला' और 'बहछैवज्ञ एजन' आदि ग्रन्थों में इस रूपों की विविधता पर प्रकाश डाला गया है।

जैन सचित्र पाण्डुलिपियों में प्रकृति की ओर पूर्व की अपेक्षा अधिक ध्यान दिया गया है। लगभग 1525 ई. में रचित 'लौरचन्दा'' नामक काव्य के कुछ चित्रित पक्षों में इस शैली का क्रमिक विकास स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। प्राकृतिक रूपाकारों को भावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करने में दिल्ली के श्री दिगम्बर जैन नया मंदिर के संग्रह में आदि पुराण के हस्तलिखित सचित्र ग्रन्थ में ऋषभदेव से जुड़े हुये चित्रों में प्राकृतिक रूपाकारों के आधीन पशु एवं पक्षियों का विशेष चित्रण हुआ है।

''आदिपुराण'' (दिल्ली, श्री दिगम्बर जैन नया मन्दिर के संग्रह से सुरक्षित) के पाण्डुलिपि चित्रों में जहाँ मानव प्राणी से सम्बन्धित विभिन्न दृश्यों का अंकन चित्रकार ने सहजता से किया है, वही पालतू, वन्य व हिंसक पशु–पक्षियों का चित्रण भी उपलब्ध चित्रों में परिलक्षित होता है। इन चित्रों में अंकित सिंह, घोड़ा, हाथी, बैल, ऊंट की उठी हुई पूँछ और उनका पैर उठाकर चलना शक्ति, ओज व गति का द्योतक है। पशु पक्षियों का चित्रण भी उपलब्ध चित्रों में परिलक्षित होता है। इन चित्रों में अंकित सिंह, घोड़ा, हाथी, बैल, ऊंट आदि की उठी हुई पूंछ और उनका पैर उठाकर चलना शक्ति, ओज व गति का द्योतक है। पशु–पक्षियों का चित्रशंकन का चित्रांकन मूलरूप से जैनधर्म के तीर्थंकरों के चिह्न के रूप में भी किया गया है। ठकत् चित्रों में अंकित मानवाकृतियों जैसी विविधता पशु–पक्षियों की आकृतियों में दृष्टिगोचर नहीं होती, किन्तु कथानक को प्रभावशाली ढंग से चित्रित करने हेतु कथा प्रसंग में वर्णित अनेक प्रकार के पशु–पक्षियों का अंकन प्राप्त चित्रों में आकर्षक प्रतीत होता है। पक्षियों में हंस, कुक्कुट, गरूड़ व बत्तख का चित्रण दर्शनीय है बत्तख, हंस आदि के पंखों का उठान और उनकी एक–एक मुड़ान आदि का आलंकारिक अंकन पक्षियों के कलेवर को प्रांजल व नयनाभिराम बना देता है। चित्र के कथाक्रम के अनुसार पशु–पक्षियों को बचे हुए स्थानों पर भी चिंत्रित करने की परम्परा प्रस्तुत चित्रों में दृष्टिगोचर होती है। इन ग्रन्थ चित्रों में कथानक से सम्बन्धित पशु व पक्षी आकृतियाँ को चित्रकार ने चित्रित किया है, वह दर्शक को अपनी और आकर्षित करते हैं। अतः उपरोक्त चित्रों में अंकित पशु आकृतियों का विस्तृत विवरण अधोलिखित है।

भारतीय संस्कृति में हाथी समृद्धि का प्रतीक है। यह सारे नम–मण्डल में विचरण करता है और इन्द्र का वाहन माना जाता है। आदिकाल से ही हाथी भारतीय चित्रकला में चित्रण का एक प्रिय विषय रहा है। इन हाथियों ने भारतीय कला को सर्वथा प्रेरणा दी है। वास्तव में हाथी एक पूर्ण कलात्मक प्राणी है। उसके दिव्य कलात्मक स्वरूप से मानव ने सुरूचि और सुबुद्धि

प्राप्त की और उसकी समुन्नत भव्याकृति से उसने साहस और संचयन किया है। हाथी के चित्रण में घुमावदार एवं प्रवाहपूर्ण रेखाओं को अंकित कर चित्रकारों ने अपनी तूलिका में लोच, गति और बल प्राप्त किया है। हथियों के लचीले रेखांकन के अभ्यास के कारण ही चित्रकारों के हाथ मंज पाये हैं। यही कारण है कि भारत की प्रत्येक चित्रशैली में हाथी आलेखनों का प्रयोग बहुतायत से किया गया है। जिसमें हाथी की रूप–रचना बड़ी ही कलापूर्ण प्रतीत होती है। वस्तुतः हाथी आलेखनों ने भारतीय कलाओं को समृद्धशाली बनाया है। जैन ग्रन्थचित्रों में हाथी अपने सरलतम रूप में चित्रित है। देवी–देवताओं की सवारी में भी इन हाथियों का प्रयोग किया गया है। जिससे चित्रों में धार्मिक भावना लहरा उठी है।

ग्रन्थ आदिपुराण के चित्रों में दिग्गज हाथियों का सशक्त चित्रण मिलता है। इन चित्रों में हाथियों की सबल एवं गतिपूर्ण मुद्रा का अंकन उल्लेखनीय है। हाथी की आकृति में शान्ति, सौम्या व वैराग्य का भाव उसके प्रत्येक अंग से झलकता है। कही हाथियों पर बैठे इन्द्र चित्रित है, तो कही चक्रवर्ती राजा। सभी चित्र धार्मिक दृष्टि से अंकित किये गये हैं। हाथी की मुद्रा में शान्ति व करूणरस की प्रधानता दृष्टिगोचर होती है। चित्रकारों ने अत्यन्त प्रवाहपूर्ण और कोमल रेखाओं से उनकी रूप–सजा में सौन्दर्य और स्वाभाविकता भरी हैं। इसीलिये हाथियों के अंकित चित्र आलंकारिक होते हुए भी यथार्थवादी प्रतृप्ति के अधिक निकट लगते हैं।

आदिपुराण के पाण्डुलिपि चित्रों में अन्त पशुओं की अपेक्षा हाथी का ही चित्रण अधिक हुआ है। हाथी की आकृति में कुछ स्वाभाविकता प्रतीत होती है। चित्रकार ने हाथियों के अंकन में प्रयुक्त रेखा एवं रंग द्वारा उनका दैहिक गठन तथा घनत्व को प्रदर्शित करने का प्रयास किया है। सरयू दोशी के अनुसार ''यहाँ (जैन शैली का पश्चिमी भारतीय शैली) हाथियों एवं मानवाकृतियों के चित्रण में प्रयुक्त उभय शैलियों की उद्‌भावना में क्रमशः अजन्ता एवं एलोरा की प्राचीन भित्ति चित्रण परम्परा निहित है।'' हाथियों के चित्रणे में दया, करुणा, वैराग्य, लयात्मकता के साथ आलंकारिकता दर्शनीय है। आलंकारिकता की प्रधानता होते हुए भी आदिपुराण के चित्र सर्वथा सादगी से परिपूर्ण है। हाथियों की सूँड, पीठासन की वस्त्र सज्जा और आभूषणों आदि की रचना में चित्रकारों की मौलिक रचना–कुशलता परिलक्षित होती है।"

इन्द्र का ऐरावत हाथी'' नामक चित्र में बलिष्ठ हाथी का सानुपातिक चारु अंकन है। हाथी के चित्रण स्वाभाविकता स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही है। विभिन्न अलंकरणों से सुसज्जित सभी अवयव, पीठ पर रखी हुई अलंकृत गद्दी, ऊपर की ओर मुड़ी हुई लहराती सी पूँछ, बलखाती हुई सूंड में कमल पुष्प तथा पाद विन्यास में लयात्मक अंकन, सजीव सशक्त ढंग से किया गया है।

चित्रों में हाथी' का अंकन उपरोक्त चित्र की भाँति किया गया है। अन्तर मात्र इतना है कि हाथी की सूंड में कमल–पुष्प का अंकन नहीं है।

''केवल ज्ञान कल्याणक में जाते राजा एवं इन्द्रगण' नामक चित्र में हाथियों का लयात्मक चित्रण अन्य चित्रों से भिन्न है। जिसमें एक हाथी की पूर्ण आकृति तथा अन्य हाथियों

का केवल मस्तक व सूँड भाग अंकित करके चित्रकार ने केवल ज्ञान में जाते हुए हाथियों की श्रृंखला दिखाने का प्रयास किया है। सभी हाथियों की सूंड में पुष्प सुशोभित है और नुकीले दाँतों का आकर्षक चित्रण है।

हाथियों का अंकन बहुतायत से किया गया है, किन्तु उनके चित्रण में बहुत अधिक विविधता दृष्टिगोचर नहीं होती। प्रायः सभी हाथियों का चित्रण एक ही ढंग का है।

हाथी के समान घोड़े को भी समृद्धता का सूचक माना गया है। युद्ध, आखेट तथा राजसी जुलूसों में हाथी, घोड़े आदि को सुसज्जित करके बहुसंख्या में चित्रित किया जाता रहाप्त पाण्डुलिपि चित्रों में घोड़े का अंकन युद्ध दृश्यों में अधिकता से किया गया है। घोड़े के अंकन में स्वाभाविकता परिलक्षित होती मोतीचन्द्र ने आदिपुराण की प्रस्तुत पाण्डुलिपि में अंकित ''घोड़े की मगरमच्छ सादृश्य पतली ग्रीवा और कोमल पैरों में ईरानी प्रभाव बताया है।''

"चक्रवर्ती और सेनापति'' नामक चित्र में की प्रमाणयुक्त, सुडौल सुदृढ व आलंकारिक शरीराकृति का चित्रण है। जिसमें पूँछ का उठान सजगता का प्रतीक है। टाँगों में गति स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही है। ग्रीवा के लम्बे बालों का चित्रण यथार्थता का बोध करता है। घोड़े की आकृति में नीलापन लिये सलेटी रंग भरा गया है।

घोड़े' की सुगठित शरीराकृति, जिसमें मुड़ी हुई पतली टाँगे, कान व पूँछ का उठानसजगता का द्योतक है। अश्व का चारु अंकन है। जिसमें चेतनता का भाव स्पष्ट परिलक्षित होता है।

''तमिस्र गुफा और सेनापति'' नामक चित्र में दो अर्थों का अंकन है। पृष्ठभूमि में दौड़ते हुए घोड़ों के अंकन में लयात्मकता व गत्यात्मकता व गत्यात्मकता का समावेश है। गर्दन के बालों का यथार्थं अंकनहै। अग्रभूमि में अंकित घोड़े का अंकन उपरोक्त चित्र के समान है।

भारतीय संस्कृति में बैल जनजीवन के स्वास्थ्य का प्रतीक है। प्रागैतिहासिक युग से बैल हमारे जीवन का अंग है। यह समाज की उन्नति व सुख का द्योतक माना जाता है। मानव विचारधारा में बैल या वृषभ सत्य व अहिंसा का प्रतीक है। जैनधर्म में वृषभ आदि तीर्थंकर ऋषभनाथ का वाहन या चिह्न माना जाता है। सम्भवतः इसी विचारधारा से प्रभावित होकर जैन चित्रकारों ने भी वृषभ का अंकन किया है। आदिपुराण के पाण्डुलिपि चित्रों में तीर्थंकर ऋषभदेव के प्रतीक चिह्न के रूप में चित्रकार ने बैल का चित्रण किया है। इन चित्रों में अंकित बैल की आकृति में अत्यधिक आलंकारिकता दृष्टिगोचर होती है। हाथी व घोड़े की आकृतियाँ चित्रकार ने जितनी सजीवता से अंकित की है वहीं बैल का चित्रण प्रतीकात्मक रूप में किया है।

प्रस्तुत दोनों चित्रों में बैलों का अंकन है जिसके अन्तर्गत कुछ स्वाभाविक अंकन, पुष्ठ व बलिष्ठ शरीराकृति, नुकीले सींग, ऊपर की ओर उठी हुई पूँछ का अंकन दर्शनीय है। चित्र सं. 52 में बैल के गलेमें बंधी घंटी का चारु अंकल है। चित्रों में बैल की खिलौने जैसी लघु आकृतियों का चित्रण है।

प्रस्तुत दोनों चित्रों में तीर्थंकर की चौकी के अग्रभाग में बैल का अत्यधिक लघु रूप में अंकन है बैल का चिह्न तीर्थकर के सिंहासन पर प्रतीक रूप में अंकित होने से चित्रित प्रतिमा निश्चय ही सीकर ऋषभनाथ की है, क्योंकि जैनधर्म में बैल को ऋषभदेव का प्रतीक चिह्न माना गया है।

पशु जगत में सिंह सबसे शक्तिशाली पशु है। इसलिए वह अपने गुणों से शक्ति का प्रतीक मानाजाता है। भारतीय कलाकार ने भी शक्ति प्रदर्शन के लिए सिंह का खुलकर प्रयोग किया है, चाहे वह आलेखनों में हो या देव प्रतिमाओं में सभी स्थानों पर सिंह का अंकन किया गया है। जैनधर्म में सिंहको चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर का प्रतीक चिह्न माना गया है। सिंह स्वयं साक्षात् शक्ति है। यहबुराई परम सत्य की विजय का प्रतीक है। प्रस्तुत पाण्डुलिपि चित्रों में सिंह को प्रायः चक्रवर्ती राजा के सिंहासन के नीचे चित्रित किया है। सम्भवतः सिंह प्रदर्शन द्वारा चित्रकार ने चक्रवर्ती राजा को अधिक शक्तिशाली दिखाने के उद्देश्य से प्रतीक रूप में चित्रित किया है। इन चित्रों में सिंह का अंकन अपेक्षाकृत कम हुआ है।

''राजा श्रेयांस का स्वप्न दर्शन'' नामक दो मुँह वाले सिंह का चित्रण है। जिसमें असंतुलित शरीराकृति, लम्बी उठी हुई पूँछ पंजों का अस्पष्ट चित्रण है। सिंह के शरीर पर काले रंग की धारियों का अंकन है।

इस चित्र में सिंहासन के नीचे दोनों किनारों पर इधर–उधर बैठे सिंहों का चित्रण है। दोनों सिंहों की क्षीणकाय दुर्बल देहाकृति, जिसमें ऊपर उठी हुई लम्बी पूँछ, सिंह से भिन्न किसी अन्य पशु जैसी विचित्र सी मुख भंगिमा का अंकन किया गया है। पंजों का अस्पष्ट चित्रण है।

प्रस्तुत पाण्डुलिपि के मात्र एक चित्र 'चक्रवर्ती सेना' नामक चित्र में ऊँट का स्वाभाविक अंकन किया गया है। जिसमें संतुलित शरीरकृति, लम्बी गर्दन, ऊपर की ओर उठी हुई पूँछ व पतली लम्बी टाँगों से ऊंट की मुद्रा का सहज बोध होता है। पैर उठाकर चलते ऊंट के अंकन में लयात्मकता व गत्यात्मकता दृष्टिगोचर होती है।

मोतीचन्द्र ने पशु आकृतियों में बैल, सिंह व ऊंट के सन्दर्भ में लिखा है कि ''इन आकृतियों में पश्चिमी भारतीय शैली की चली आ रही परम्परा का निर्वाह हुआ है।''

"चक्रवर्ती सेना और सेनापति" (चित्र सं. 60, ''मेरुदत्त भावना भाते हुए'' इन दोनों चित्रों में अन्य चित्रों से भिन्न पशु आकृतियों का चित्रण है। जिसके अन्तर्गत रबड़ के खिलौने जैसी विचित्र सी पशु आकृतियों में असंतुलित शरीराकृति, ऊपर की उठी हुई पूँछ, टाँगें अत्यन्त पतली डंडी के समान एँठी हुई, सम्पूर्ण आकृति का अस्वाभाविक चित्रण पूर्वोक्त चित्रों से भिन्न है। दोनों आकृतियों में नीला–सलेटी सा रंग भरा गया है।

प्रस्तुत ग्रन्थ के चित्रों में अंकित पूर्वोक्त पशु आकृतियों जैसी विविधता पक्षी आकृतियों में दृष्टिगोचर नहीं होती। कथागत पक्षियों के अन्तर्गत हंस, बत्तख व कुक्कुट आदि के चित्रण की विविधता का विश्लेषणात्मक वर्णन निम्न प्रकार है।

बत्तख, हंस, कुक्कुट व गरूड़

आदिपुराण के पाण्डुलिपि चित्रों में उक्त पक्षी आकृतियों का आलंकारिक अंकन किया गया है। ''भरत, बाहुबली का जल युद्ध'' नामक चित्र में (चित्र सं. 56), जल में क्रीड़ा करती हुई बत्तख का लयात्मक चित्रण है। बत्तख की गोल–मटोल सी शरीराकृति में सुरम्य, चित्ताकर्षक, नयनाभिराम अंकन, पंखों में थिरकन व स्पंदन व्यक्त है।

हंस का चित्रण भी चित्रकारों को प्रिय रहा है। भारतीय चित्रकला में देव–देवियों के वाहन के रूप में हंस पक्षी अमर हो गया। हंस शान्ति व पवित्रता का प्रतीक है। इसीलिए इसीलिए इन चित्रों में हंस को देवी सरस्वती के वाहन के रूप में चित्रित किया है।

"धरणेन्द्र, पद्मावती सरस्वती' नामक चित्र में मद्मासन मुद्रा में बैठी हुई देवी सरस्वती के निचले भाग में हंस का वाहनरूप में चित्रण है। जिसके अन्तर्गत भोली–भाली स्निग्ध आकृति, बिन्दुरूप नेत्र का चारु अंकन है। चित्रण में छाया रहित हल्की सीमा रेखा का प्रयोग किया गया है।

'माता पद्मावती'' (चित्र सं. इस चित्र में हंस'' के सुरम्य पंखों को मयूर पंखों के आकार में सुन्दर ढंग से चित्रित किया गया है। दोनों हंसों के मध्य पुष्प का कोमल चित्रण है।

इन सभी चित्रों की पृष्ठभूमि में हंसों का अंकन दर्शनीय है। पंखों द्वारा उड़ते हंस का सुरम्य चित्रण है।

बत्तख व हंस के अतिरिक्त उक्त चित्रों में से मात्र एक चित्र ''धरणेन्द्र, पद्मावती एवं सरस्वती'' नामक चित्र (चित्र सं. 21) में कुक्कुट का विशेष प्रकार का आलंकारिक अंकन है। चित्र में अंकित कुक्कुट कामुख एक वृत्त के रूप में प्रतीत होता है, उसी के मध्य में नेत्र रूप एक अन्य लघुवृत्त दिखाया गया है। खड़े हुए सर्पफण के समान ऊपर को मुड़े हुए पंखों का चित्ताकर्षक अंकन है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. सरयूदोशी. अर्ली आर्टिकुलेशनय 1050–1350 ए. डी. मार्ग बम्बई. खण्ड 36. पृष्ठ **34.**
2. प्रस्तुत चित्र क्रमांक 51 अवलोकनाथी।
3. मोतीच्चन्द्र. (1959). इलस्ट्रेटेड मैन्सक्रिप्ट आफ द महापुराण इन द कलैक्शन ऑफ श्री दिगम्बर जैन नया मंदिर. ललितकलाः नई दिल्ली. पृष्ठ **79.**
4. अग्रवाल, वासुदेवशरण. (1966). भारतीय कला. वाराणसी।
5. कासलीवाल, कस्तूचरन्दर. राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की ग्रंथ–सूची. 5 खण्डों में प्रकाशित. श्री महावीर ग्रंथ माला. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र. श्री महावीर जी (राज.)।
6. कुमार, प्रमोद. (1977–78). दिगम्बर देवालय. *आकृति.* जयपुर. अंक–1–4. दिसम्बर।
7. खुराना, के.एल. (1985). मध्य कालीन भारतीय संस्कृति. आगरा।